प्रश्न-पेपर ३२ — मार्क्स १००

प्रथमा पूर्ण।

प्र. १ नीचे आपेला प्रश्नोना स्पष्ट जवाब लखो (कोई पण १०) — २० मार्क्स

(१) न पछी परमां कया व्यंजनो आवे त्यारे शा शा फेरफार थाय ते जणावी (बहारना उदा. पूछो) कर्मधारय समासनो विग्रह केवी रीते थाय ते नपुं. ब. व. मां समजावो।

(२) आ नी पछी औ आवे अने तेनी पछी इ आवे तो पूर्वना स्वरनी शुं संधी थाय ते दृष्टांत पूर्वक जणावी कर्मणिमां ऋ वर्णना थता फेरफारो लखो।

(३) पाठ १९ नि. ३ केटली रीते लागु पडे? केवी रीते? ते समजावी पाठ ३१ नि. ७ आ नियमनी प्राप्ति होवां छतां क्यां न घटी शके?

(४) पाठ २६ नि. १ना अपवादभूत नियमों जणावी कया अक्षरनी पछी कयो अक्षर आवे तो पूर्वना अक्षरनो ञ थाय?

(५) म सिवाय बीजा कोई व्यंजननो अनुस्वार थाय? जो थाय तो कया संजोगोमां केवी रीते थाय? ते जणावी क्, ड्, ऋ अने ऌ इत् नुं बहारना दृष्टांतपूर्वक फल जणावो।

(६) त्वन्दीनान् रक्षेः आ वाक्यनो प्रयोग कृत्य (विध्यर्थ कृदन्त) वापरी ससंधी जणावी तमारे आवेल <u>स्थान</u> माटेना शब्दो लिंग साथे जणावो।

(७) तमारे व्यंजनसंधीना आवेल नियमो जणावी स्वरादि अनाम्यन्त, स्वरादि समानान्त तथा एक स्वरवाला उपसर्गो लखो।

(८) पाठ ५० नि. ५ न होत तो खोटुं रूप शुं थात? ते जणावी प्रथमामां कुल केटला कृदन्तो आव्या? कया कया? दृष्टांत अने अर्थपूर्वक लखो।

(९) पाठ ५७ नि. १नो अपवादभूत नियम जणावी त (क्त) प्रत्यय वधारे लागे के तवत् (क्तवतु) प्रत्यय? शा माटे?

(१०) पाठ ३१ नि. ५, पाठ ५२ नि. ५, पाठ ५५ नि. ४, पाठ ३२ नि. ३ तथा पाठ ५९ नि. ३ उदाहरणपूर्वक लखो।

(११) पाठ ५४ नि. ५ शा माटे? ते न होत तो कया नियमथी शुं रूप थात? ते जणावी तमारे आवेल तद्धितना प्रत्ययों जणावी बहारना दृष्टांतमां घटना करो।

प्र. २ (अ) नीचेना शब्दों तथा धातुओ लिंग, गण, अने पद साथे जणावो (कोई पण १०)
अधिकार, देव (देव विना), स्वजन, खबर, उखेडवुं, पशु (पशुविना) प्रेम — ७½ मार्क्स
शिक्षा, निष्फल थवुं (निस् + फल विना) समस्त, शोधवुं।

(आ) नीचेना शब्दोनी साधनिका करो (कोई पण ३) — ७½ मार्क्स

(इ) नीचे आपेला धातुओनी साधनिका करो (कोई पण ३) — ७½ "
निरन्वाध्यैः, सन्दूरय, अध्येष्यमालया, परोद्धियेत

प्र. ३ (अ) नीचेना शब्दोना मांग्या प्रमाणे रूपो लखो (कोईपण ३) — ७½

(१) अदस्, इदम् - पुं. स्त्री. ए. व. ब. व. (२) विद्यार्थिन् - पु. स्त्री. २-५-६-८ नपुं. २-८

(३) श्रेयस् - पु. ३ थी ६, स्त्री. ७-८, नपुं. १-८ (५) गुरु - पु. १-३-५-७ स्त्री. ए. व. ब. व.

(आ) नीचेना धातुना कर्त्तरि रूपो लखो (कोई पण ३) 7½
(1) उद् + सम् + तुष् = ५ काल ए.व. (२) निर् + नि + नी = ५ काल ब.व.
(3) परि + उद् + मुद् = ५ काल ३ पु. (४) उद् + वि + ईक्ष् = ५ काल ए.व. ब.व.
प्र. ४ (अ) नीचेना धातुना कर्मणि रूपो लखो (कोई पण ३) 7½
(1) उद् + निस् + तृ = ५ काल २ पु. (२) सम् + दुस् + ईक्ष् = ५ काल ३ पु.
(3) वि + उद् + क्षुभ् = ५ काल ए.व. (४) निर् + सम् + लोक् = ५ काल ब.व.
(आ) नीचेना आपेला धातुना कर्त्तरि वर्तमान कृदन्तना रूपो लखो (कोई पण ३) 7½
(1) परि + उद् + हस् = पु. स्त्री. ए.व. ब.व. (२) वि + आ + इष् - पु. स्त्री. ५ थी ८ नपुं. १ थी ८
(3) नि + अनु + रुध् = पु. स्त्री. १, ३, ५, ७ नपुं. २ अने ८ विभक्ति
(४) वि + उद् + जन् = पु. स्त्री. २, ४, ६, ८
प्र. 5 (अ) नीचे आपेला समासोनो विग्रह करी अर्थ जणावो (कोई पण ३) 7½ मार्क्स
अन्नाणी, उन्नयदनरयः, सादिष्ठ्वाः, कविमत्यौ
प्रश्न. 5 (आ) नीचे आपेला वाक्योनुं संस्कृत ससंधि अने क्रियापद अने कृदन्त सह जणावो (कोई पण ३) 7½
(1) लोको वडे ताडन करातो, नगरजनों वडे जोवातो एवो भिक्षुक दान आपता एवा राजा वडे संतोष पमाडायो अने दरिद्रपणाथी मुक्त करायो।
(२) कर्मक्षय माटे उद्यम करता, चारित्रने इच्छतां, गुरुनी समीप रहेतां जे मुमुक्षुओने (मोक्षार्थिन्) सदा ज्ञानक्रिया द्वारा आनंद मेळवतां एवा गुरु वडे चारित्र अर्पण करायुं।
(3) मुक्तिने माटे परमेश्वरनुं ध्यान धरतां, अनुष्ठानो वडे आत्माने तृप्त करतां एवा गुरु आवते छते आत्मगुणोनी उपेक्षा करतां एवा शिष्यो वडे बेसायुं।
(४) संसारमां परिभ्रमण करतां, अनेक प्रकारना सुखदुःखने अनुभवता, जीवो वडे वैराग्य पमायो अने शाश्वत सुखने आपती एवी मुक्तिनी इच्छा कराई।
(इ) नीचेना वाक्योनी संधि छोडी गुजराती अर्थ लखो (गमे ते ५) 10 मार्क्स
सूचनाः- एक पण वाक्य निषेधात्मक नथी
(1) आरो ह्यस्त्वन्ततोऽहन्त्वान्ताडितवाँश्च
(२) को नोऽयमागतोऽस्त्यत्राद्य
(3) आर्थय आपि पुरेहाहत्वंरन्त्वत्
(४) भवाति भवतो गच्छन्नरो भवन्तीहौम्।
(5) अत्रैवोद्ध्रियमाणो नेक्ष्यतास्माभिरपीदानीम्।

जवाब → ① त्वम् ह्यः आरः ततः च अहम् त्वाम् ताडितवान्
② नः। अद्य अत्र अयम् कः आगतः अस्ति।
③ पुरा इह अपि अहम् त्वत् वरम् आचार्म। ④ ओम्, भवति, भवतः गच्छन्नरः इह भवन्ति।